haribhoomi.com

हरिभूमि बालभूमि

शुक्रवार
28 जून 2024

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

विशेष : अंतरराष्ट्रीय क्षुद्र-ग्रह दिवस, 30 जून

बच्चों, तुमने एस्टेरॉयड्स यानी क्षुद्र-ग्रहों के बारे में सुना या पढ़ा होगा। ये ऐसे अनोखे खगोलीय पिंड होते हैं, जो हमेशा से खगोलविदों और खगोल-विज्ञान में रुचि रखने वालों के मन में जिज्ञासा और कौतुहल जगाते रहे हैं। जानों, इन रहस्यमयी क्षुद्र-ग्रहों के बारे में कुछ खास बातें।

ग्रह-उपग्रह से अलग क्षुद्र-ग्रह

नॉलेज / शिखर चंद जैन

बच्चों, क्षुद्र-ग्रह के नाम में भले ही ग्रह शब्द जुड़ा है, लेकिन वास्तव में ये ग्रह नहीं होते हैं, क्योंकि ग्रहों के लिए तय पैमाने पर ये खरे नहीं उतरते हैं। ये उपग्रह भी नहीं हैं, क्योंकि ये किसी ग्रह के चारों ओर चक्कर नहीं लगाते हैं। असल में क्षुद्र-ग्रह अंतरिक्ष की चट्टानों, धूल और मलबे के छोटे-बड़े टुकड़े होते हैं, जो अरबों वर्षों से इसी स्थिति में अंतरिक्ष में विचरण कर रहे हैं। बच्चों, अगर तुम सोचते हो कि सारे ग्रहों की तरह क्षुद्र-ग्रह भी गोलाकार, अंडाकार होते हैं, दिखने में बेहद खूबसूरत या चमकीले होते हैं या यह बहुत सिस्टमेटिक तरीके से सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं, तो हम तुम्हें जानकारी दे दें कि ज्यादातर क्षुद्र-ग्रहों का कोई निश्चित आकार नहीं होता। आमतौर पर ये किसी मिट्टी के धेले या आलू की तरह दिखते हैं। सूर्य की परिक्रमा करते हुए यह लुढ़कते और घूमते हैं, इनका व्यास कुछ फीट से लेकर कई सौ मीलों तक का हो सकता है। क्षुद्र-ग्रह वास्तव में ग्रह हैं ही नहीं, इसकी जानकारी वैज्ञानिकों को बहुत बाद में पता चली।

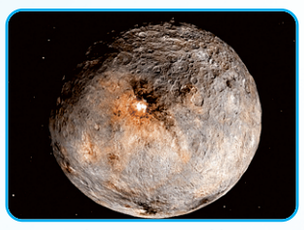

सबसे बड़ा क्षुद्र-ग्रह 'सेरेस'

सबसे पहला खोजा गया क्षुद्र-ग्रह

बच्चों, पहला क्षुद्र-ग्रह इटली के खगोल शास्त्री ग्युसेप पियाजी ने 1 जनवरी 1801 में खोजा था। इसका नाम उन्होंने रोम की कृषि देवी के नाम पर 'सेरेस' रखा। 19वीं सदी के मध्य तक इसे ग्रह ही माना जाता रहा, लेकिन बाद में इसकी वास्तविकता सामने आई, क्योंकि बड़ी दूरबीनों से भी ये पिंड तारों जैसे ही नजर आते थे। खगोल वैज्ञानिक विलियम हर्शेल ने इन्हें 'क्षुद्र-ग्रह' यानी 'एस्टेरॉयड' नाम दिया, जिसका अर्थ होता है- तारे के आकार का। इसे 'प्लेनेटॉयड' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है- ग्रह जैसा। 2006 में अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ ने सेरेस को 'बौना ग्रह' यानी 'ड्वार्फ प्लेनेट' समूह में रखने का प्रस्ताव दिया था।

सबसे बड़े आकार वाले क्षुद्र-ग्रह

कुछ क्षुद्र-ग्रह आकार में इतने बड़े हैं कि उन्हें छोटा ग्रह मान लिया गया है। चार सबसे बड़े क्षुद्र-ग्रह हैं- सेरेस, वेस्टा, पलास और हाइजिया। इनके बारे में क्रमवार जानो-

सेरेस: यह अब तक खोजा गया सबसे बड़ा क्षुद्र-ग्रह है। इसे बौना ग्रह की श्रेणी में रखा गया है। इसका व्यास 597 मील है। इसमें क्षुद्र-ग्रह बेल्ट के कुल द्रव्यमान का एक तिहाई हिस्सा समाहित है।

वेस्टा: वेस्टा का व्यास 329 मील है। इसे एक छोटा ग्रह माना जाता है। वेस्टा आकार में छोटा है, लेकिन पलास से भारी है। पृथ्वी से यह सबसे चमकीला क्षुद्र-ग्रह नजर आता है। इसका नाम रोमन देवी 'वेस्टा' के नाम पर रखा गया है।

पलास: ग्रीक देवी 'पल्लास एथेना' के नाम पर इस क्षुद्र-ग्रह का नामकरण किया गया है। सेरेस के बाद इसकी ही खोज की गई थी। यह हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा खगोलीय पिंड है, जो आकार में गोल नहीं है।

हाइजिया: हाइजिया कार्बन सरफेस वाले क्षुद्र-ग्रहों में सबसे बड़ा है। इसका नाम ग्रीक स्वास्थ्य देवी के नाम पर रखा गया है। यह 220 मील चौड़ा और 310 मील लंबा है। इसकी आकृति लगभग गोल है।

क्षुद्र-ग्रह के प्रकार

रासायनिक संरचना के अनुसार क्षुद्र-ग्रहों को विभिन्न वर्गों में बांटा गया है। मुख्य रूप से ये तीन तरह के होते हैं- 1.कार्बन सतह वाले 2.सिलिकॉन सतह वाले और 3.धातु सतह वाले। ज्यादातर क्षुद्र-ग्रह कार्बन सतह वाले होते हैं। कुल क्षुद्र-ग्रहों में इनकी संख्या लगभग 75 फीसदी है, जबकि 17 फीसदी क्षुद्र-ग्रह सिलिकॉन सतह वाले होते हैं। बाकी 8 फीसदी में धातु सतह वाले या अन्य क्षुद्र-ग्रह शामिल हैं। *

क्षुद्र-ग्रहों का प्रमुख समूह ट्रोजन क्षुद्र-ग्रह

क्षुद्र-ग्रह बेल्ट के बाहर क्षुद्र-ग्रहों के अन्य समूह भी हैं। इनमें एक प्रमुख समूह 'ट्रोजन क्षुद्र-ग्रह' है। ट्रोजन क्षुद्र-ग्रह किसी ग्रह या चंद्रमा के साथ एक कक्षा साझा करते हैं। अधिकांश ट्रोजन क्षुद्र-ग्रह बृहस्पति के साथ सूर्य की परिक्रमा करते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि क्षुद्र-ग्रह बेल्ट में जितने क्षुद्र-ग्रह होते हैं, उतने ही ट्रोजन क्षुद्र-ग्रह भी हो सकते हैं।

प्रिपरेशन / अंजू जैन

खुल रहे हैं स्कूल रहना है रेडी-कूल

बच्चों, समर वेकेशंस के बाद स्कूल खुल रहे हैं। स्कूल जाने के लिए खुद को खूब अच्छे से कैसे प्रिपेयर करो, इस सेशन में तुम्हारी स्टडी कैसे बेहतर ढंग से हो कि तुम्हारा रिजल्ट बेस्ट रहे, जानो।

बच्चों, गर्मियों की लंबी छुट्टियां बीत गई हैं। स्कूल खुलने वाले हैं। कुछ बच्चे तो स्कूल जाने के लिए उत्साहित होंगे, लेकिन कुछ बच्चे यह सोचकर उदास होंगे कि अब उनकी मस्ती खत्म। लेकिन बच्चों स्कूल जाना जरूरी है, पढ़ाई से ही तुम्हारा करियर बनता है, उज्ज्वल भविष्य बनता है। तुम स्कूल हमेशा उत्साह-उमंग के साथ जाओ। इससे तुम्हें स्कूल जाने और पढ़ने में तो मजा आएगा ही, साथ ही तुम स्टडी में पहले से कहीं अच्छी तरह परफार्म करोगे।

कैलेंडर देखकर प्लान करो: बच्चों, तुमने सुना होगा कि 'टाइम इज मनी।' इसलिए समय को कभी बर्बाद मत होने दो। इसे अपनी पढ़ाई, मनोरंजन, खेलकूद और आराम के लिए इस्तेमाल करो। इसके लिए एक-एक दिन की प्लानिंग करना जरूरी है। हमेशा अपने सामने एक कैलेंडर रखो और आने वाले वीक में क्या-क्या नया करना है, कब और कैसे करना है, पढ़ने और खेलने का क्या समय होगा, इसकी पूरी प्लानिंग करो और इसे सही ढंग से अमल में भी लाओ।

ना छूटे रीडिंग की आदत: समर वेकेशन में जब तुम्हें मौका मिला तो तुमने तरह-तरह की बुक्स

की रीडिंग की होगी। यह आदत बनाए रखो। रोजाना कोई अच्छी किताब, बाल पत्रिका या अखबार पढ़ो। इससे तुम्हें देश-दुनिया के नए समाचार मिलेंगे, नई तकनीक और आविष्कारों का भी पता चलेगा, सामान्य ज्ञान बढ़ेगा, साथ ही पढ़ने में तुम्हारा इंटरेस्ट भी बना रहेगा।

हेल्दी डाइट लो: बच्चों, पढ़ाई में तुम्हारा दिमाग अच्छे से काम करे, तेज रहे, इसके लिए तुम्हारी बॉडी का फिट एंड एनर्जेटिक रहना बहुत जरूरी

है, इसलिए हमेशा हेल्दी डाइट लो। तुम्हें विटामिन-मिनरल युक्त, सुपाच्य और ताजा भोजन करना होगा। घर का ही बना ताजा भोजन, दालें, फल, सब्जियां और दूध-दही का नियमित सेवन करो। इससे तुम हमेशा स्वस्थ रहोगे और पढ़ने में भी मन लगेगा। *

खुलेंगे स्कूल तो आएगा मजा

स्कूल खुलने पर उदास होने के बजाय खुश होना चाहिए। क्योंकि लंबे समय बाद तुम्हें अपने क्लासमेट्स मिलेंगे, जिनके साथ तुम खूब मौज-मस्ती, खेलकूद और हंसी-मजाक करते थे। साथ ही वे टीचर्स भी मिलेंगे, जो तुम्हारी प्रॉब्लम्स को चुटकियों में सॉल्व कर देते हैं। बच्चों, याद रखो पढ़ाई-लिखाई एक बोझ नहीं, बल्कि तुम्हारे जीवन को सहज-सुगम, सफल और समृद्ध बनाने का माध्यम है। इसलिए अगमने ढंग से स्कूल जाने के बजाय हैप्पी, कूल और पॉजिटिव एटिट्यूड के साथ स्कूल जाने की तैयारी शुरू कर दो। हमारी गुड विशेज ...

जीके क्विज-110

1. अठारहवीं लोकसभा के नए अध्यक्ष कौन बने हैं?
2. लगातार तीसरी बार किसे भारत का राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया गया है?
3. पिछले दिनों किस देश ने अपनी पहली अंतरिक्ष एजेंसी KASA प्रारंभ की?
4. हाल ही में हैदराबाद किस राज्य की पूर्ण राजधानी बना है?
5. सापेक्षता का सिद्धांत (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) की खोज किसने की थी?
6. विश्व का सबसे घना जंगल कौन-सा है?
7. 'लावणी' किस राज्य का पारंपरिक नृत्य है?
8. भारत में केसर का उत्पादन सबसे ज्यादा किस राज्य में होता है?
9. पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह कौन-सा है?
10. विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल कौन-सा है?

बच्चों, जीके क्विज-110 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-109 का उत्तर : 1.उपेंद्र द्विवेदी, 2.पेमा खांडू, 3.महर्षि पतंजलि, 4.21 जून 2015, 5.जिमनास्टिक्स, 6.व्हांगहो, 7.किडनी, 8.फुटबॉल 9.स्कॉटलैंड 10.मैलिक अम्ल

जीके क्विज-109 का सही उत्तर देने वाले : मानवी मधुकर-बिलासपुर, नितिन-दुर्ग, कबीर-हिसार, आरती-ईमेल से, अत्रेयन-ईमेल से, अजय-धमतरी, लीना-ईमेल से, अंजलि-ईमेल से, शुभम-बिलासपुर, दीक्षा-रायपुर, सरबजीत-करनाल, क्षमानिधि-बेमेतरा, दिव्यम-रोहतक, केशव-भोपाल, आर्यन-रोहतक

हंसगुल्ले

टीचर : मैंने ब्लैक बोर्ड पर क्या लिखा है, पढ़कर बताओ।
रोहन : तरबूजा।
टीचर : ठीक से देखो, तजुरबा लिखा है।
रोहन : सर, गर्मी इतनी ज्यादा पड़ रही है कि तजुरबा भी तरबूजा दिखाई दे रहा है।
-आकाश, रोहतक

चिंटू : मम्मी, एडमिशन फॉर्म में आइडेंटिफिकेशन मार्क के कॉलम में क्या लिखूं?
मम्मी : 'हाथ में मोबाइल' लिख दो।
-अमन, रायपुर

पप्पू : पढ़ाई कैसी चल रही है?
गप्पू : समंदर जितना सिलेबस है, नदी जितना पढ़ पाता हूं, बाल्टी भर याद होता है, गिलास भर लिख पाता हूं, चुल्लू भर नंबर आते हैं... उसी चुल्लू में डूबने का मन करता है।
-हितेन, भोपाल

कहानी

पवन कुमार वर्मा

मुर्गों को लगा कि अब वो जमाना गया, जब लोग उनकी बांग से सुबह जागते थे। मुर्गों ने एक आपात बैठक बुलाई कि क्या उन्हें अब सुबह-सुबह बांग देना चाहिए? युवा मुर्गों का मत था, बदले दौर को देखते हुए हमें बांग देना बंद कर देना चाहिए, लेकिन बूढ़े मुर्गे इस बात से सहमत नहीं थे, उन्होंने जो तर्क रखे, युवा मुर्गे आगे कुछ ना बोल सके। आखिर मुर्गों की इस बैठक में तय क्या हुआ?

मुर्गों की आपात बैठक

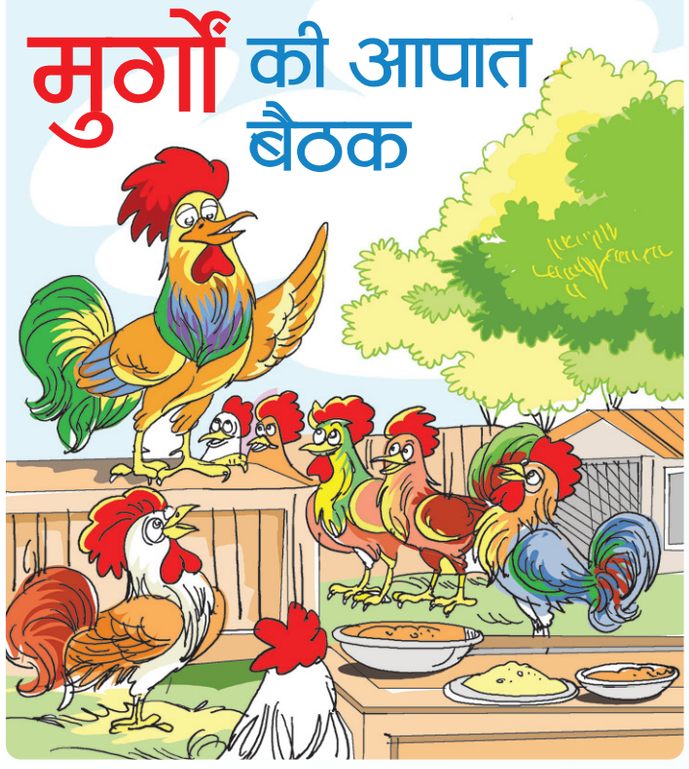

आज मुर्गों ने आपात बैठक बुलाई थी, जिसे लेकर पूरे मुर्गा समाज में गहमा-गहमी थी। दूर-दूर से मुर्गे इस आपात बैठक में भाग लेने आए थे। दरअसल, कुछ वर्षों से मुर्गे बहुत परेशान थे। लोगों को सुबह जल्दी जगाने के लिए उन्हें बांग देने की आदत है- कुकडू-कू... कुकडू-कू। लेकिन अब उनकी बांग का कोई असर ही नहीं होता। लोग जल्दी सोना और जल्दी जागना भूल गए हैं। मुर्गे की बांग से जागना लोगों के लिए अब बीते जमाने की बात हो गई है। ऐसे में मुर्गों को क्या करना चाहिए? यह बैठक इसी पर चर्चा के लिए बुलाई गई थी। बैठक में आए मुर्गे अपनी-अपनी जगह बैठ गए। कुछ मुर्गे तो केवल बढ़िया खाने की लालच में आए थे। वे इस प्रतीक्षा में थे कि बैठक जल्द समाप्त हो और वे खाने पर टूट पड़ें।

'भाइयों! अब आप बारी-बारी से अपनी बात रखना प्रारंभ करें।' इस घोषणा के साथ बैठक शुरू हो गई। सबसे पहले एक उत्साही नौजवान मुर्गे ने बड़े जोर-शोर से अपनी बात रखी, 'मुझे तो लगता है कि सुबह-सुबह हमारे बांग देने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। रात-दिन का अंतर अब समाप्त हो चुका है। दुनिया बदल गई है। लोग चौबीस घंटे काम कर रहे हैं। जब सोकर उठने का समय होता है, तब लोग सोने जाते हैं। फिर क्यों हम उन्हें अनावश्यक परेशान करें?' 'मैं इससे पूरी तरह सहमत हूं। अब हमें भी बदलते वक्त और लोगों की सुविधानुसार खुद को बदलना चाहिए। इसी में समझदारी है भाई।' एक और नौजवान मुर्गे ने सभी को आगाह किया। तभी एक अधेड़ उम्र मुर्गे ने ऐसी बात कह दी कि पंडाल ठहाकों से गूंज उठा, 'भाई! कौन-सी बांग की बात कर रहे हैं आप? मैं जहां रहता हूं, वहां एक छात्रावास है, जिसमें पढ़ने वाले बच्चे रहते हैं। मैं सुबह बांग देने के लिए आंखें मलता जब बाहर आता हूं, तो हैरान रह जाता हूं। छात्रावास के बच्चे पहले से ही मैदान में कसरत और योग करते दिखाई देते हैं। हमसे पहले तो छात्रावास में लगी घंटी उन्हें जगा देती है। ऐसे में उन्हें हमारी बांग की क्या जरूरत?'

'लेकिन इसके बाद भी तो जल्दी उठने वालों की संख्या दिनों-दिन घट रही है। आखिर लोग सुबह जल्दी उठने का लाभ क्यों नहीं लेना चाहते? शायद इसी कारण लोगों का स्वास्थ्य समय से पहले गड़बड़ हो रहा है।' मंच पर बैठे एक मुर्गे ने उस अधेड़ उम्र मुर्गे की बात पर टिप्पणी की। 'भाई देखिए, चाहे कोई कुछ भी कहे, यह मामला बहुत गंभीर है। प्रकृति ने जो कार्य हमें सौंपा है, उसमें बाधा उत्पन्न हो रही है। अब हमें भी अपने लिए कोई और काम सोचना चाहिए। हम दिनों दिन अपनी पहचान खोते जा रहे हैं।' एक शांत स्वभाव वाले बूढ़े मुर्गे ने बड़ी विनम्रता से अपनी बात रखी। कुछ मुर्गों ने उसकी बात का भी समर्थन किया।

'अब आप लोग ही कोई सुझाव दीजिए। क्या हमें बांग देने का काम छोड़ देना चाहिए?' मंच पर बैठे एक मुर्गे ने पूछा।

'कतई नहीं। कम से कम मैं तो बांग देना नहीं छोड़ूंगा। यह कार्य हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं। आज भी गांव-देहात में लोग हमारी बांग पर ही उठते हैं।' एक बूढ़ा मुर्गा कांपती आवाज में बोला। सभी की निगाहें उसकी ओर चली गईं। तभी एक और बूढ़ा मुर्गा लड़खड़ाती आवाज में बोला,'लोगों की सुविधा के लिए हमें अपने-आप को कतई नहीं बदलना चाहिए। वह भी तब, जब लोग जानबूझ कर अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। मेरा तो मानना है कि इस समय हमारी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। हमें इसे और भी जिम्मेदारी के साथ निभाना चाहिए।'

'मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं। मुझे विश्वास है कि देर-सवेर लोग इस बात को जरूर समझेंगे। वे सुबह जल्दी उठेंगे। हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अपना कार्य जोर-शोर से करते रहना चाहिए।' एक और बूढ़े मुर्गे ने कड़कती आवाज में अपनी बात रखी। उसकी बात समाप्त होते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। युवा मुर्गे भी खामोश रहे। उन बूढ़े मुर्गों की बात सुनकर सभी का टूटा विश्वास फिर से लौट आया था। धीरे-धीरे सभी बूढ़े मुर्गों की बातों पर सहमत हो गए। अंत में यह तय किया गया कि वे सुबह बांग देना बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे। कभी न कभी तो वह दिन आएगा, जब लोग जल्दी सोने और जल्दी उठने के फायदे समझेंगे और इस आदत को अपनाएंगे। *

कविता

शिवचरण चौहान

टिटहरी का गीत

टिट टिटहरी टिट टिटहरी
टी टी टी टी बोले।
उड़े गगन में ऊंचे चिड़िया
पंख हवा में तोले।।
नहीं टिटहरी बैठा करती
कभी किसी भी पेड़ में।
बैठा करती टीले ऊपर
कभी खेत की मेड़ में।
नन्हे-नन्हे बच्चे इसके
लगते कितने भोले।।
पंख हवा में तोले।।
लाल चोंच है,पीठ सिलेटी
और पैर हैं पीले।
ताल किनारे रहती
फिर भी पैर न करती गीले।
अरी टिटहरी घर आ मेरे
बिस्तर में आ सो ले।।
पंख हवा में तोले।।

रंग भरो-153

रंग भरो-153 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

निशिता, दिल्ली

दिव्यांश, दुर्ग

दिव्या, बिलासपुर

डॉली, मटियारी

दीक्षा, रायपुर

अंकित, धमतरी

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

आतिया-बहादुरगढ़, प्रगति-बिलासपुर, सौम्य-बालोद, युक्ति-धमतरी, दिशांत-महेंद्रगढ़, शुभम-बिलासपुर, लोकेश-रोहतक, कमल-महासमुंद, प्रिया-रायगढ़, खुशी-भिवानी, चंपक-जांजगीर, कविता-कटनी, हितेश-दिल्ली, रौनक-धमतरी, कृश-बालोद

रंग भरो 154

बच्चों, इस चित्र में चिंटू अपने डॉगी को प्यार से खाना दे रहा है। इस चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम बालभूमि में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो- संपादक - फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली- 110035 या ई-मेल आईडी balbhoomi-hb@gmail.com पर मेल करो।

एक समान चित्र खोजो

बच्चों, यहां मंकी के कई सारे चित्र दिए गए हैं। इनमें से दो चित्र बिल्कुल एक जैसे हैं। तुमको एक जैसे दिखने वाले दोनों चित्रों को खोजना है। जल्दी से खोजो जरा...

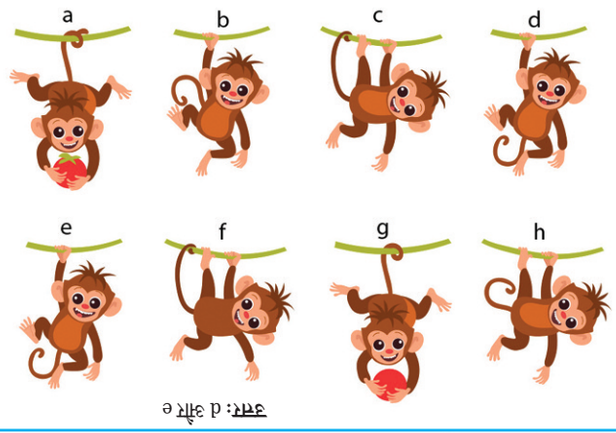

उत्तर: d और e